ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के देवी-देवता

डॉ. हेतल जी. चौहाण
सूरत, गुजरात

आदिवासी शब्द दो शब्दों "आदि" और "वासी" से मिल कर बना है और इसका अर्थ मूल "निवासी" होता है। भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा आदिवासियों का है। पुरातन लेखों में आदिवासियों को "अत्विका" और "वनवासी" भी कहा गया है (संस्कृत ग्रंथों में)। संविधान में आदिवासियों के लिए अनुसूचित जनजाति शब्द का उपयोग किया गया है। भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में संथाल, गोंड, मुंडा, खडिया, हो, बोडो, भील, गरासिया, मीणा, उरांव, धोडिया, चौधरी, राठवा, गामित, वसावा, बिरहोर आदि हैं।

महात्मा गांधी ने आदिवासियों को "गिरिजन" (पहाड़ पर रहने वाले लोग) कहकर पुकारा है। जिस पर वामपंथी मानविज्ञानियों ने सवाल उठाया हैं कि क्यान मैदान में रहने वालों को मैदानी कहा जाता है ? आदिवासी को दक्षिणपंथी लोग "वनवासी" या "जंगली" कहकर पुकारते हैं। इस तरह के नामों के पीछे बुनियादी रूप से यह धारणा काम कर रही होती है कि आदिवासी देश के मूल निवासी हैं या नहीं तथा आर्य यहाँ के मूल निवासी हैं या बाहर से आए हैं ? जबकि निश्चित रूप से कहा जाए तो आदिवासी ही भारत के मूलनिवासी हैं। भारत सरकार ने इन्हें भारत के संविधान की पांचवी अनुसूची में "अनुसूचित जनजाति" के रूप में मान्यता दी है। अक्सर इन्हें अनुसूचित जातियों के साथ एक ही श्रेणी में "अनुसूचित जाति और जनजाति" में रखा जाता है जो कुछ सकारात्मक कार्यवाही के उपायों के लिए पात्र है।

आमतौर पर आदिवासियों को भारत में जनजातीय लोगों के रूप में जाना जाता है। आदिवासी मुख्य रूप से भारतीय राज्यों उड़िया, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान,

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, एवं गुजरात में अल्पसंख्यक है जबकि भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों में ये बहुसंख्यक हैं, जैसे मिजोरम।

गुजरात के आदिवासियों में भी दक्षिण गुजरात के आदिवासियों की बात करें तो यहाँ मुख्यत: कुंकणा, धोडिया, गामित, वसावा, राठवा, नायका, हळपति, भील, चौधरी, डामोर, कटारा, कोटवाणिया इत्यादि आते हैं। हम आज यहाँ इनके पारंपरिक देवी-देवताओं की बात करेंगे।

आदिवासियों का अपना धर्म है। ये प्रकृति पूजक हैं और जंगल, पहाड़, नदियों एवं सूर्य की आराधना करते हैं। ये लोग प्रकृति के बहुत ही निकट होते हैं। इनके जीवन-निर्वाह का मुख्य आधार खेती है और खेत की मौसम के अनुसार इनके त्योहार आते हैं। जिनकी विस्तुत जानकारी प्राप्त करते हैं -

उन्दरियो देव :

खेत में फ़सल तैयार हो जाने के बाद एक दिन मिट्टी का चूहा बनाया जाता है। एक कपड़े के टुकड़े की झोली बनाई जाती है, जिसे दो आदमी पकड़ते है और उस झोली में इस चूहे को रख दिया जाता है। उसके बाद वहाँ खड़े लोग उस झोली में ककड़ी, भिंडी, टिंडा आदि डालते हैं। झोली पकड़ने वाले दोनों आदमी झोली लेकर भागने लगते है और बाक़ी लोग उनका पीछा करते हुए उनके पीछे भागते लगते हैं। इस तरह वे लोग जब गाँव की सीमा से बाहर निकल जाते हैं तब यह भागदौड़ रोक दी जाती है। उसके बाद खाने-पीने की महफ़िल सजती है।

पहोतियो :

जब सर्दियों में वाल (एक द्विदल) के पौधे को पापड़ी आती है, तब पहली पापड़ी का उत्सव मनाया जाता है, जिसको पोहोतियो कहा जाता है। इसमें दोस्तों तथा रिश्तेदारों को बुलाया जाता है और 'उबाडिया' की पापड़ी का मज़ा ताड़ी अथवा महुड़े की शराब के साथ लिया जाता है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

नंदुरो देव :

यह त्योहार विशेषकर वर्षा और प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ है। पहली बारिश के आगमन के बाद जब खेत में फ़सल उगने लगती है और उसके बीज निकलने लगते हैं तथा जंगल में नया घास उगने लगता है तब उसकी ख़ुशी में यह नंदुरो देव त्योहार मनाया जाता है।

इस त्योहार में नारियेल फोड़कर, जमीन पर शराब डालकर और मुर्गी या बकरे की आहूति देकर पूजा और प्रार्थना की जाती है कि उगी हुई फ़सल तथा जंगल की वनस्पति समग्र वर्ष के दौरान बिना किसी नुकसान के अच्छी रहे, जिससे उनका जीवन निर्वाह आसानी से चल सके। ख़ास तौर पर यह त्योहार जून महीने में मनाया जाता है। इसकी यह धार्मिक विधि देखनेलायक होती हैं।

वाघ देव :

इनमें आज भी इस त्योहार का बड़ा महत्त्व है। सालों पहले जब इस इलाके में गाढ़ जंगल था, तब यहाँ वाघों (बाघों) की बस्ती विशेष थी और वैसे भी वाघ जंगल का शक्तिशाली प्राणी है, इसलिए उनके डर तथा आदर की वजह से वाघ देव त्योहार में उसकी पूजा होती है। विधि अनुसार खेत में बनी पगदंडी पर साग की एक डाल बोई जाती है, उसके पास तैयार हुई नई फ़सल, नारियेल और शराब से पूजा की जाती है तथा पितृ अर्पण किया जाता है।

चौरी देव :

वाघ देव त्योहार मनाने के बाद जब फ़सल कटने के लिए तैयार हो जाती है, तब अमावस्या के दिन यह त्योहार मनाया जाता है। इस दिन बैल के सिंग को रंग कर उसे सजाया जाता है और उसको अच्छा खाना दिया जाता है। कभी-कभी बैलों की दौड़ की स्पर्धा का भी आयोजन किया जाता है। यह जाति प्रकृति से जुड़ी हुई जाति है। उनके हर त्योहार में प्रकृति तथा प्राणियों की पूजा-अर्चना होती हैं। उनकी जीवनशैली और त्योहारों में प्रकृति को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

देवमोगरा माता :

देवमोगरा माता समग्र आदिवासी समाज की मुख्य देवी हैं। देवमोगरा नाम के गाँव में देवमोगरा माता का मंदिर स्थित है। यहाँ हज़ारों लोग मन्नतें माँगने आते हैं। यह इनका पवित्र यात्राधाम हैं। यहाँ लोग ख़ुद के उगाए धन, फ़सल और सब्जी माताजी को चढ़ाने आते हैं।

पांडोर देवी :

ये गाँव की रक्षक देवी हैं। इनको पार्वती का रूप माना जाता हैं। विशेष रूप से गाँव के बाहर बड़े पेड़ के नीचे इनकी स्थापना की जाती हैं। इनके साथ मिट्टी के बने हुए प्राणी के खिलौने जैसे कि घोड़ा, बाघ, बैल इत्यादि रखे जाते हैं। जो प्रकृति के साथ गाँव की रक्षा करेंगे ऐसा माना जाता हैं।

इंदला देवी :

इंदला भीम की पत्नी हिदंबा का दूसरा नाम हैं। इनको शक्ति का प्रतिक माना जाता हैं। प्राचीन काल में सोनगढ़ से उच्छल के बीच के जंगलों में ये इंदला देवी और उनके पुत्र घटोत्कच के जन्म के समय की शारीरिक निशानी वाला एक पत्थर था, किन्तु अभी उसकी कोई जानकारी नहीं हैं।

नोकटी देवी :

रामायण की प्रसिद्ध राक्षसी शूर्पणखा जो रावण की बहन थी, उसका दूसरा नाम नोकटी देवी है। लोककथा के अनुसार मोगलबारा के जंगलों में एक बार एक वीर पुरुष ने यहाँ की एक महिला का नाक काट लिया था और यहाँ के लोग उस महिला की पूजा करते थे, उनकी एक पत्थर की मूर्ति थी किन्तु उकाई का सरोवर बनने के बाद यह स्थान उस सरोवर में डूब गया है।

इस तरह हमने देखा कि आदिवासियों के देवी-देवता अनूठे तथा अनोखे हैं। समय बहुत बदल गया है, बदलते समय के साथ बाक़ी सभी समाजों ने अपनी-अपनी सहूलियत के अनुसार अपने रीति-रिवाज़ों में बदलाव किए हैं परन्तु यह समाज

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

अपने रीति-रिवाज़ों में कोई बदलाव नहीं ला पाए हैं। आज भी उनकी जीवनशैली में वहीं मिट्टी की सुगंध आती हैं, जो हमें यह एहसास दिलाती हैं कि यह समाज आज भी प्रकृति तथा जमीन के साथ जुड़ा हैं।

विशेष :

यह जानकारी आदिवासियों से मिलकर प्राप्त की गई हैं, इसलिए इमें संदर्भ नहीं दिए गए हैं।

www.ijahms.com